



धर्म वह माना जाता है, जिसके द्वारा पाप का नाश हो।

What destroys sin is religion.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 185 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, शनिवार 13 जनवरी 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रुपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सक्षिप्त समाचार

दिल्ली में ब्यूनूतम तापमान 3.9 डिग्री, घने कोहरे के कारण 23 ट्रेनें विलंबित

बड़ी दिल्ली (आरएनएस)।

दिल्ली-एक्सीआर शीतलवर की चपेट में है और शुक्रवार को ब्यूनूतम तापमान 3.9 डिग्री सेल्सियस के आसापास रहा और घने कोहरे के कारण यात्रा में बाधा उत्पन्न हुई। भारत मौसम विभाग (आईएमटी) ने इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाओं अड्डे पर शूल्य विजिविलिटी की स्थिति दी। घने कोहरे के कारण दिल्ली जाने वाली 23 ट्रेनें में दैरी हुई और उनमें से कुछ छह घंटे की दैरी से चली। मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण न केवल दिल्ली विभिन्न राज्यों में यात्रा प्रभावित हुई।

दिल्ली के विविधियों की सुवह ठंडी और धूंध भरी रही, ब्यूनूतम तापमान 3.9 डिग्री सेल्सियस के आसापास रहा, जो मौसम के औसत से तीन डिग्री कम है। आईएमटी का अनुमान है कि दिन का अधिकतम तापमान लगभग 18 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर का

तापमान शूल्य से 4 डिग्री नीचे

श्रीनगर (आरएनएस)। भीषण

शुष्क ठंड से श्रीनगर में

शुक्रवार को ब्यूनूतम तापमान शूल्य से 4 डिग्री सेल्सियस

बीचे और जम्मू में 3.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

जम्मू में शुक्रवार को श्रीजन का सवास कम ब्यूनूतम तापमान 3.7 दर्ज किया गया, जिसकि गुरुवार को सवास कम अधिकतम तापमान 8.8 दर्ज किया गया।

प्रधानमंत्री मोदी ने किया देश के सबसे लंबे सी-ब्रिज अटल सेतु का उद्घाटन



मुंबई (आरएनएस)। शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के सबसे लंबे सी-ब्रिज अटल सेतु का उद्घाटन किया। यह ब्रिज मुंबई से नवी मुंबई को जोड़ेगा। ब्रिज के कारण दो घंटे की दूरी सफर 15 मिनट में पूरी होगी। दिसंबर 2016 में मोदी ने इस पुल की आधारशिला रखी थी। पुल की मुंबई इंटररेशनल एयरपोर्ट और नवी मुंबई से युग्म गोवा और दक्षिण भारत की यात्रा का समय भी कम हो जाएगा। अटल सेतु के निर्माण में करीब 177,903 मीट्रिक टन

स्टील और 504,253 मीट्रिक टन सीमेंट का मार्गी ने देश के सबसे लंबे सी-ब्रिज अटल सेतु का उद्घाटन किया गया है। लगभग 18,000 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। उम्मीद है कि इसके पूरा होने पर प्रतिदिन लगभग 70,000 वाहन चलेंगे और यह 100 वर्ष चलता रहेगा। मुंबई स्ट्रेट घंटे की दूरी 15 मिनट में होगी पूरी

दिल्ली के विविधियों की सुवह ठंडी और धूंध भरी रही, ब्यूनूतम तापमान 3.9 डिग्री सेल्सियस के आसापास रहा, जो मौसम के औसत से तीन डिग्री कम है। आईएमटी का अनुमान है कि दिन का अधिकतम तापमान लगभग 18 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर का

तापमान शूल्य से 4 डिग्री नीचे

श्रीनगर (आरएनएस)। भीषण

शुष्क ठंड से श्रीनगर में

शुक्रवार को ब्यूनूतम तापमान 3.7 दर्ज किया गया, जोकि गुरुवार को सवास कम अधिकतम तापमान 8.8 दर्ज किया गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट में कहा कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बूँगा।

संपादकीय

आर्थिक संकट से अशाँति

अभी तीन साल पहले तक यह सोचना कठिन था कि जर्मनी जैसे धनी देश में किसान प्रतिरोध का ऐसा का नजारा देखने को मिलेगा। लेकिन जर्मन सरकार की प्राथमिकताओं ने देश को संकट में फँसा दिया। उसका नतीजा सामने है। यूरोप में पसरते अर्थिक संकट का असर बढ़ती सामाजिक अशांति के रूप में दिख रहा है। बात अब महाद्वीप की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था जर्मनी तक पहुंच चुकी है। यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद से जर्मनी की मुश्किलें बढ़ती चली गई हैं। जर्मनी भी रूस पर प्रतिबंध लगाने वाले देशों में उत्साह से शामिल हुआ। नतीजतन, रूस से सस्ती ऊर्जा का मिलना बंद हुआ, जिसका असर उसके उद्योग जगत पर पड़ा है। उत्पादन महंगा होने से जर्मनी के उत्पाद विश्व बाजार में पहले जैसे सस्ते नहीं रह गए हैं। इससे उनका बाजार गिरा है। दूसरी तरफ यूक्रेन युद्ध के कारण भड़की महंगाई का असर भी पड़ा। इस कारण कुछ महीने पहले जर्मनी सरकार को कमखर्ची का नीति अपनानी पड़ी। इसके तहत डीजल सब्सिडी में कटौती कर दी गई। उसका नतीजा है कि अब राजधानी बर्लिन समेत कई शहरों में किसान प्रदर्शन कर रहे हैं। खेती में काम आने वाली गाड़ियों में मिलने वाली टैक्स की छूट कम कर दी गई है। इसके खिलाफ किसानों के प्रदर्शन से कई जगहों पर हाई-वे जाम हो गए हैं। इस कारण बड़े स्तर पर यातायात-परिवहन के प्रभावित होने की आशंका पैदा हुई है। सात जनवरी से ही बड़ी संख्या में किसान बर्लिन आने लगे। वहां ऐतिहासिक ब्रैंडनुर्ग द्वार के पास उन्होंने बड़ी संख्या में ट्रैक्टर खड़े कर दिए। किसान उनके हॉर्न बजाकर भी अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। देशभर में ऐसे सैकड़ों प्रदर्शन जारी हैं। उत्तरी और पूर्वी जर्मनी में भी कई जगहों पर यातायात और जनजीवन प्रभावित होने की खबर है। कई जगहों पर किसानों की रैलियां भी प्रस्तावित हैं। किसान संगठनों ने कहा है कि विरोध कार्यक्रम और रैलियां इस पूरे सासाह जारी रहेंगी और 15 जनवरी को बर्लिन में एक बड़ा प्रदर्शन किया जाएगा। सरकार ने कमखर्ची की नीति के तहत करीब 6,000 करोड़ यूरो की बचत की योजना बनाई है। इसी का असर किसानों पर पड़ा है। अभी तीन साल पहले यह सोचना कठिन था कि जर्मनी जैसे धनी देश में इस तरह का नजारा देखने को मिलेगा। लेकिन जर्मन सरकार की प्राथमिकताओं ने देश को संकट में फँसा दिया। उसका नतीजा सामने है।

विचार

तकनीकी आधार पर राहत

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि चूंकि दोषियों को सजा महाराष्ट्र में मिली थी, इसलिए उनकी रिहाई के फैसले का अधिकार महाराष्ट्र सरकार को है, ना कि गुजरात सरकार को। तो गेंद अब महाराष्ट्र सरकार के पाले में पहुंच सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने बिलकीस बानो के मामले में 11 अपराधियों को समय से पहले मिली रिहाई को रद्द करने का फैसला तकनीकी आधार पर लिया। इससे इन मुजरिमों को फिर से रिहाई मिल जाने का रास्ता बंद नहीं हुआ है। जाहिर है, समय से पहले रिहाई से व्यग्र हुए लोगों को इस मामले में फौरी राहत ही मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि चूंकि दोषियों को सजा महाराष्ट्र में मिली थी, इसलिए उनकी रिहाई के फैसले का अधिकार महाराष्ट्र सरकार को है, ना कि गुजरात सरकार को। तो गेंद अब महाराष्ट्र सरकार के पाले में पहुंच सकती है। न्यायमूर्ति बीवी नागरता और उज्जल भुइयां की पीठ ने फिलहाल इन दोषियों को दो हफ्तों के अंदर जेल अधिकारियों के पास सरेंडर करने का आदेश दिया है। गुजरात सरकार के समय से पहले रिहाई देने के फैसले को लेकर समाज के एक दायरे में गहरी नाराजगी और मायूसी पैदा हुई थी। इसलिए ये मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। उल्लेखनीय है कि 2008 में मुंबई में महाराष्ट्र स्थित एक अदालत ने इन मुजरिमों को गुजरात में हुए 2002 के गोधरा दंगों के दौरान बिलकिस बानो के साथ हुए सामूहिक बलात्कार और उनके परिवार के सात सदस्यों की हत्या के मामले में दोषी पाया था और उन्हें सजा सुनाई थी। बाद में इन 11 दोषियों में से एक ने गुजरात हाई कोर्ट से समय से पहले रिहाई की अपील की। तब गुजरात हाई कोर्ट ने उसकी याचिका को यह कर ढुकरा दिया था कि इस फैसले का अधिकार उसी राज्य के पास जहां सजा दी गई थी। इसके बाद महाराष्ट्र में अपील दायर की गई, जिसे ढुकरा दिया गया। उसके बाद उस अपराधी ने सुप्रीम कोर्ट से अपील की कि वह गुजरात सरकार को आदेश दे। सुप्रीम कोर्ट ने मई 2022 में गुजरात सरकार को आदेश दिया कि वो समय से पहले रिहाई की उस अर्जी पर विचार करे। इसके बाद गुजरात सरकार ने सभी 11 दोषियों को रिहा कर दिया। लेकिन अब कोर्ट ने समय से पहले रिहाई के मामले में एक स्पष्ट व्यवस्था दी है। उसने इस मामले में राज्य सरकारों के अधिकार की व्याख्या की है।

बच्चों, मीडियाकर्मियों की कब्रगाह

गाजा की वाहेल दहू की दुनिया कतरा-कतरा करक बिखर रही है। तीन दिन पहले, वाहेल ने अपने परिवार के पांचवे सदस्य, सबसे बड़े बेटे हमजा दह को दफनाया। चार महीने पहले उन्होंने अपनी पत्नी, 15 साल के बेटे, 7 साल की बेटी और 18 माह की पोती को सुरुपेंखाक किया था। परिवार के ये सभी लोग इजरायली हवाई हमलों में मारे गए थे। बावजूद इसके वाहेल की हिम्मत टूटी नहीं है। वे इजराइल द्वारा गाजा में किए जा रहे नरसंहर को दुनिया को दिखाने में जुटे हुए हैं। वाहेल दाहूद, अल जजीरा के गाजा ब्यूरो चीफ हैं। उनके पुत्र हमजा भी अल जजीरा के संवाददाता थे और अपने एक साथी पत्रकार मुस्तफा शुराया के साथ यात्रा पर थे जब खान युनिस के पश्चिमी हिस्से में एक इजरायली मिसाइल उनकी कार से आ टकराई। जिस कब्रिस्तान में उनके पुत्र को दफनाया गया वहीं से बातचीत करते हुए वाहेल बुझे-बुझे लेकिन शांत नजर आए। उन्होंने कहा कि वे गाजा के उन दोर सारे लोगों में से एक हैं जो हर दिन अपने प्रियजनों को अंतिम विदाई देने को मजबूर हैं। गाजा न केवल 'हजारों बच्चों की कब्रगाह' बन गया है बल्कि यह मीडियाकर्मियों के लिए भी सबसे घातक इलाका है। गाजा पर इजरायली हमले शुरू होने के बाद के तीन महीनों में वहां 79 पत्रकार जान गवां चुके हैं और सैकड़ों घायल हुए हैं। सन् 1992 से कमेटी दू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स (सीपेजे) ने गाजा के इलाकों का कवरेज करने वाले पत्रकारों के आंकड़े संकलित करने प्रारंभ किया है। तब से लेकर आज तक, गाजा में पहले महीने में मारे गए पत्रकारों की संख्या किसी भी अन्य संघर्ष में मारे गए पत्रकारों से अधिक है। दूसरे युद्ध, जो रूस और यूक्रेन के बीच 2022 से जारी है, में अब तक कुल 17 पत्रकारों ने अपनी जान गंवाई है। फैंचै कैमरामैन फेडरिक लेकलर्क-इमहाफ, जो मई में मारे गए, के बाद से वहां अब तक किसी पत्रकार ने अपनी जान नहीं खोई है। मगर गाजा में मारे गए पत्रकारों की संख्या द्वितीय विश्वयुद्ध में मृत पत्रकारों की संख्या (69) से अधिक हो गई है। वियतनाम युद्ध में 63 पत्रकारों ने जान गंवाई थी और सीपीजे के अनुसार, ईराक में 2003 से लेकर अब तक 283 पत्रकार मारे हैं जिनमें युद्ध के पहले माह झू मार्च 2003 और अप्रैल 2003 के बीच मारे गए 11 पत्रकार भी शामिल हैं।

তথশুদ্ধ জীত বালা বাংলাদেশী চুনাব!

१८०

सन् 2024 चुनावों का वर्ष है। और साल का पहला चुनाव बांग्लादेश में है। पर इसमें नतीजा क्या होगा, यह सभी को पहले से ही मालूम है। रविवार को मतदान हुआ, और यह गारंटीशुदा है कि मौजूदा प्रधानमंत्री शेख हसीना की जीत निश्चित है। वे सन् 2009 से सत्ता में हैं और इस चुनाव से उनका पांचवा कार्यकाल शुरू होगा। जाहिर है शेख हसीना ने पहले से सुनिश्चित किया है कि जीत केवल और केवल उनकी हो। चुनावों का बहिष्कार कर रही बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के ज्यादातर नेता जेल में कैद हैं, पत्रकार चुप्पी साधे रहने के लिए बाध्य हैं। और तमाम एनजीओ की गतिविधियों पर पाबंदियां हैं। ऐसे में हसीना की पार्टी का कोई प्रभावी प्रतिरूपी न तो मैदान में है और न ही नैरेटिव में। बीएनपी ने इन चुनावों को एक ढकोसला बताया है जबकि शेख हसीना ने वोट डालने के बाद जनता से मतदान में भाग लेकर लोकतंत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाने का अनुरोध किया। बीएनपी को एक आतंकी संगठन बताते हुए उन्होंने दावा किया कि वे देश में लोकतंत्र कायम रखने का भरसक प्रयास कर रही हैं। एफपी द्वारा दी गई खबर के अनुसार राजधानी ढाका के एक मतदान केन्द्र में शुरू के 30 मिनटों में केवल तीन लोगों ने वोट डाले। कई लोग अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के प्रतिनिधियों से यह कहते सुने गए कि उन्हें धमकी दी गई है कि यदि उन्होंने सत्ताधारी अवामी लीग के पक्ष में मतदान नहीं किया तो सरकारी कल्याण योजनाओं का लाभ हासिल करने के लिए जरूरी लाभार्थी कार्ड उनसे छीन लिए जाएंगे। बांग्लादेश में लोकतंत्र की जड़ें गहरी नहीं हैं। वहां 2014 और 2019 में हुए पिछले दो चुनाव भी सत्ताधारी दल के पक्ष में ज्युके हुए थे विपक्षी दल बीएनपी को लंबे समय से पंगु बना रखा है। इस चुनाव के बाद तो वह मृतप्रायः हो जाएगी। चुनाव में मुकाबला कड़ा है, यह धारणा बनाने के लिए अवामी लीग ने अपनी पार्टी के सदस्यों, उनके



सन 2024 चुनावों का वर्ष है। और साल का पहला चुनाव बांग्लादेश में है। पर इसमें नतीजा क्या होगा, यह सभी को पहले से ही मालूम है। रविवार को मतदान हुआ, और यह गारंटीशुदा है कि मौजूदा प्रधानमंत्री शेख हसीना की जीत निश्चित है। वे सन् 2009 से सत्ता में हैं और इस चुनाव से उनका पांचवा कार्यकाल शुरू होगा। जाहिर है शेख हसीना ने पहले से सुनिश्चित किया है कि जीत केवल और केवल उनकी हो।

परिचितों और विपक्ष से दलबदल करने वालों को निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। मगर जैसा अनुमान था, अवामी पार्टी की जीत सुनिश्चित है। सबाल है पांचवीं बार हुए इस ढकोसले में बांग्लादेश और उसके लोकतंत्र के लिए क्या निहितार्थ हैं? क्या बांग्लादेश में लोकतंत्र नष्ट हो चुका है? इतने लंबे समय तक सत्ता में काबिज रहने से शेष छह सालों की अधिक अवधि तक शासन करने वाली महिला प्रधानमंत्री बन गई हैं, वरन् उन पर बांग्लादेश में लोकतंत्र को समाप्त करने का भी तमंग लग गया है। उन्होंने प्रेस को डरा दिया है और पुलिस, अदालत और न्यायपालिका को काबू में कर लिया है ये उन्होंने अपने पिता की विरासत के इर्दगिर्द अपनी छवि गढ़ी है, जिनकी 1975 में हुए तखापलट में हत्या कर दी गई थी। अब राजधानी ढाका के हिस्से में उनका चेहरा नजर आता है। उन्होंने बींगनीपुर की नेता खालिदा जिया को आभाहीन बना दिया है वे 2018 से अपने घर पर नजरबंद हैं। उनकी पार्टी के ज्यादातर नेताओं को या तो जेल में कैद कर दिया गया है, या उनकी हत्या कर दी गई है या उन्हें देश छोड़ने पर बाध्य कर दिया गया है। इसी का नतीज

एक भारतीय

हरेशंकर व्यास

उफ ! नरेश गायल। इस चहरे ने कही भारतीयों की याद करा दी। जैसे एक राजन पिल्लैथा, ब्रिटेनिया बिस्कुट का मालिक। बेचारा तिहाड़ जेल में गर्मी से फड़फड़ाते हुए मरा। ऐसे ही आर्थर रोड जेल में एक हर्षद मेहता मरा। फिर याद हो आया कैफे कॉफी डे का मालिक वीजी सिंद्धार्थ। इस अरबपति ने आत्महत्या की। और जितना सोचें नाम उभरेंगे। रामलिंगा राजू, केतन पारेख, वेणुगोपाल धूत, चंदा कोचर या भगोड़ा विजय माल्या, मेहुल चौकसी, नीरव मोदी और रेलीगेर के जेलों में सड़ रहे मालिकान मालविंदर सिंह, शिवेंदर सिंह जैसे कई अरबपति भारतीय। इन्हें आप चाहें तो भेष या लूटने वाला मानें लेकिन ये सब मानव हैं। पृथ्वी का वह प्राणी है, जिसे बेसिक गरिमा, संवेदना, सहानुभूति और न्याय का हक इसलिए है व्यंगेंकि जन्म मनुष्य योनि में हुआ है न कि पशु योनि में। मैं सनातनी और वैष्णवी हिंदू हूँ। और मेरे जीवन की संगीत खुराक में लता मंगेशकर की आवाज में 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिए जे पांडी पराई जाए रे' की गूंज हमेशा गुंजती है। तभी मेरे लिखे मैं जिद रही है कि गुलामी में रचे-रमे हम हिंदुओं को इतिहास से मिली कहर व्यवस्था की असंवेदनाओं पर जितना हथौड़ा मार कर लिखा जा सके लिखा जाए। हम भारतीयों का इतिहास

क्याकि कातवालों, कारिदा, हांकिमों और लाठियों व तलवारों की विधर्मी शासन व्यवस्था के अनुभवों का है सो, स्वाभाविक जो हम सदियों से बेगैरत, बेऔकात जिंदगी जीने की नियति लिए हैं। फिर भले वक्त मुगलों का हो, अंग्रेजों का हो, नेहरू का हो, पीवी नरसिंह राव का हो या नरेंद्र मोदी का। सोचें, भारतीयों की उद्घिता को बंधन मुक्त बनाने वाले पीवी नरसिंह राव के वक्त पर। मैं नरसिंह राव का मुरीद था। लेकिन उनके वक्त में भी जब तिहाड़ जेल में अरबपति राजन पिल्लई की मौत हुई तो मैंने लिखते हुए सबाल किया कि भला नरसिंह राव ऐसे असंवेदनशील कैसे जो तिहाड़ में इस तरह कोई मरे! सही है राजन पिल्लई के सेठ होने के कारण उनकी मौत ने दिल-दिमाग को हिलाया था। लेकिन इसके साथ यह वास्तविकता भी थी कि एक अरबपति भी सीबीआई, ईडी, जजों, हांकिमों की असंवेदनशीलता में बैमौत मारा जाता है तो भारत की जेलों में आम आदमी किस तादाद में कैसी लावारिस, बैमौत जिंदगी जीते व मरते हैं! मैं एक बूढ़े, 83 वर्षीय स्टेन स्वामी के चेहरे को तो कतई भूल नहीं पाता, जिसे भीमा कोरेंगांव की कथित साजिश में गिरफतार कर जेल में डाला गया और जेल में उस बीमार, बूढ़े आदमी को पानी पीने के लिए स्ट्रॉटक उपलब्ध नहीं कराई गई। अंततः वह बैमौत मृत्यु को प्राप्त हुआ। स्टेन स्वामी की मौत ने भी मुझे लिखने को मजबूर

फुगावों की मादकता से मुक्ति का समय

पंकज शर्मा,

यह सुखद है कि कांग्रेस का शीष नेतृत्व उत्तसाहीलालों की टोली की इस बिगुलबाजी की पूरी तरह अनदेखी कर रहा है और पूरी संजीदगी से सौट बंतवारे की प्रक्रिया को तजुर्बेकार लोगों की देखरेख में पूरी करा रहा है। कांग्रेस के भीतर अपनी तिकड़में की बिसात बिछाते घूमते रहने वाले गिरोह ने यह राग अलापना भी शुरू किया था कि इंडिया-समूह के कुछ राजनीतिक दल ऐन वक्त पर पलट जाएंगे, इसलिए कांग्रेस को अकेले चुनाव लड़ने की तैयारियां रखनी चाहिए। सिफ़र इच्छाधारी होने भर से अगर इच्छाएं पूरी होने लगतीं तो फिर बात ही क्या थी? फिर इच्छाएं अगर आसमानी हों तो वे यूं ही ज़मीन पर नहीं उतर आती हैं। उन्हें आसमानी परिश्रम के ज़रिए अपनी बाहों में भर कर ज़मीन तक लाना पड़ता है। ला कर ज़मीन में बोना पड़ता है। खाद-पानी देना पड़ता है। उसके बाद फूटने वाले अंकुरों को कीड़े-मकोड़ों से सहेजना पड़ता है। तब जा कर इच्छाओं के पौधे आहिस्ता-आहिस्ता पेढ़ बनते हैं। यह काम दो-चार दिनों में नहीं होता है। इसके लिए अनवरत अनथक खटने की दरकार होती है। तब कहीं जा कर किसी की कोई इच्छा थोड़ी-बहुत पूरी होती है। और, इच्छा अगर सामूहिक हो तो उसे मौज़िल तक पहुंचाने की राह सामूहिकता-भाव रख कर ही शक्ति लेती है। सामूहिक मेहनत, सामूहिक दरियादिली, सामूहिक समझदारी और सामूहिक अर्थवत्ता के बिना सामूहिक लक्ष्य हासिल करने की एक भी मिसाल इतिहास में नहीं है। इकलखुरेपन से, अपना-तेरी से, अहम्मन्यता से और 'तू चल, मैं आता हूँ' के काँइयापन से मजमूर्ह मकसद पूरे होने का एक भी उदाहरण अगर दुनिया के किसी पूर्ववृत्तांत में आप ने पढ़ा हो तो बताइए। लक्ष्यों तक पहुंचने की पद्धतियां सभ्यता के आरंभ से तय हैं। वे किसी के बदलने से बदलती नहीं हैं। 2024 की वसंत ऋतु गुजरने के बाद



नरेंद्र भाई मोदी का वासंती-काल समाप्त होने की उम्मीद लगाए बैठे सकल-विपक्ष के सामूहिक लक्ष्य को अंजाम तक पहुंचाना कोई ख़ाला जी का खेल नहीं है। अगर इंडिया-समूह का कोई एक राजनीतिक दल या व्यक्ति यह सोच रहा हो कि वह अकेले अपने बूते यह कृशिमा कर दिखाएगा तो उसकी सूरमाई के परखच्चे उड़ते हम-आप गमगीन हो कर जल्दी ही देखेंगे। ममता बनर्जी को अगर लग रहा है कि चूंकि उन्हें लोकसभा के पिछले चुनाव में पश्चिम बंगाल के मतदाताओं ने 43.7 प्रतिशत वोट के साथ 22 सीटें दे दी थीं और कांग्रेस महज़ दो सीटें ही जीती थीं, इसलिए सीट-बटवारे में वे कांग्रेस को लड़ने के लिए दो ही सीटें देंगी तो जितनी जल्दी वे इस विपरीत-बुद्धि से बाहर आ जाएं उनके लिए ही बेहतर होगा। ममता को यह नहीं भूलना चाहिए कि बंगाल के पिछले विधानसभा चुनाव में अगर कांग्रेस ने अपना मूक-विलय उनकी तृणमूल के साथ न कर दिया होता तो वे 294 में से 222 सीटें नहीं जीत जातीं। उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि लोकसभा के पिछले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 40.6 प्रतिशत वोट के साथ 18

किया था तो इनकम टेक्स के कारिंदा को लूट और लाठी से तंग आए कैफे कॉफी डे के अरबपति वीज़ सिद्धार्थ की आत्महत्या पर भी मैंने लिखा था इसलिए कि कोई कितना ही भ्रष्ट हो, पापी हो, देशद्रोही हो वह है तो मानव समाज का वह जीव जिसकी जिंदगी मानव मूल्यों, मानव संवेदनाओं मानवनीय न्याय व्यवस्थाओं में रची-बसी होनी चाहिए। भारत यदि जंगल और जंगल राज नहीं हैं तो क्यों कर हर नागरिक बिना औकात के है ये लोगों की औकात पैसे और ताकत से बनती ये बिगड़ती है ? क्यों कर, जिसकी लाठी उसकी भैंस है ? और फिर लाठी भी सभी को उनके अलग-अलग वक्त, अलग-अलग मौके पर औकात के कम-ज्यादा होने के अनुभव करवाने वाली ! जाहिन है हम लोग क्योंकि सैकड़ों सालों से मालिक बनाम गुलाम या जैसे रामजी रख्खेंगे वैसे हर लंगे की नियति में बंधे आए हैं तो इसके मनोविज्ञान में सत्ता और लाठी की महिमा भी हमारी सोच और व्यवहार के एक आधार है। तभी बतौर मनुष्य हर व्यक्ति सिफारिश अपने निज सरोकारों में सिमटा होता है। इसलिए मानवीय संस्कारों, प्राथमिकताओं, मानवीय सरोकारों, मूल्यों, संवेदनाओं से गरिमा के साथ जिंदगी जीना संभव ही नहीं है। कोई भी हो और वह पैसों से या सत्ता से अपने आपको श्रेष्ठ, परमश्रेष्ठ अरबपति, प्रधानमंत्री बना ले या मंत्री, अफसर ब

नायक-महानायक, हारा बन जाए लंकिन सत्ता के खौफ में भूरेलाल-वीपी सिंह के एक वक्त मैंने धीरुभाई अंबानी को कंपकंपाते, लकवाग्रस्त होते बूझा था। जगा याद करें हाल के शाहरुख खान और उसके बेटे आर्यन के चेहरों को, याद करें पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव के अस्पताल में दाखिल उस चेहरे को जो किसी लकव्यभाई के झूठे आरोपों में फड़फड़ाती सांसें लेते हुए थे। और इस सब पर भारत के लोग, भारत का मीडिया हर वक्त लिंच करते हुए परपीड़ा में मजा लेता हुआ था। दरअसल आजादी के बाद नेहरू और सर्विधान सभा ने भारतीयों की औंकात को अंग्रेजों के समय से भी गई गुजरी बनवाने की गलतियां की हैं। इसलिए नागरिकों की कोई औंकात नहीं तो व्यवस्था संवेदनहीन, मानवाधिकारहीन और अन्यायों से ऐसी ठूट बनी है कि जिले का कलकटर बैठक में एक ट्रक डाईवर को औंकात बतलाता मिलेगा तो ईडी, सीबीआई या थाने का कोतवाल मुख्यांत्रियों, गृहमंत्रियों, प्रधानमंत्रियों, अरबपतियों को औंकात बतलाता मिला है फिर खुद हाकिम, कलकटर, कोतवाल भी बिना औंकात के रोते व सिसकते मिलेंगे। इसलिए क्योंकि इन्हे औंकात दिखलाने वाले दर्जनों व्यवस्थागत लेयर हैं। सबाल है हम भारतीयों की औंकात का निर्धारक तत्व क्या है? मेरा मानना है 'लाठी! जिसकी लाठी उसकी भैंस विषयांतर हो गया है।

के डर की वजह से केजरीवाल की नीयत पर शक्ति करने वालों से भी मैं सहमत नहीं हूँ। वे भी अब अच्छी तरह समझ गए हैं कि कांग्रेस-मुक्त भारत की स्थापना के भाजपाई घड़यंत्र का मोहरा बन कर वे अपने दीर्घकालीन राजनीतिक भविष्य से अंततः हाथ धो बैठेंगे। वे अब सकल-विपक्ष के साए तले ही महफूज़ रह सकते हैं। इंडिया-समूह को भी यह समझ लेना चाहिए कि यह समय अपने सहयोगियों के किए-अनकिए में मीनेमेख निकालने का नहीं, मजबूती से उनके साथ खड़े रहने का है। लालू प्रसाद, नीतीश कुमार और शरद पवार की विस्तारावादी खुवाहियों को सीट बंटवारे की राह का रोड़ा बता कर ज़ेरशोर से प्रचारित करने वाले मीडिया-घुसपात्र आपको एकाध हफ्ते बाद हताशा में ढूँढ़े नज़र आएंगे। सत्तासीन डोरियों से संचालित नचनिया-मंडली के इन जमूरों को ऐसे-ऐसे तुमके लगाते देख अब पूरा मुल्क आजिज़ आ गया है। वे मौजूदा सत्ता-व्यवस्था से इतनी निर्लिङ्जता से एकाकार हो चुके हैं कि नरेंद्र भाई की विदाई का भय उनकी रक्त शिराओं में भाजपा के बदन से भी दस गुना ज्यादा रफतार से खदबदा रहा है। सत्ताच्युत होने पर भी भाजपा का उतना बुरा हाल नहीं होने वाला है, जितना चाय से भी ज्यादा गर्म केतलियों का हो जाएगा। दस बरस के अपने घनशोर अनैतिक कर्मों का डर अब बहुत-से मीडिया-प्रेतों को बेतरह सता रहा है। सो, अनें वाले चार-पांच महीने उनके नाच की नंगई तो और भी बढ़ने ही वाली है। अब आइए कांग्रेस पर। मुझे लगता है कि कांग्रेस यह अच्छी तरह समझ गई है कि यह बक्त दोबारा नहीं आने वाला है। इसलिए वह इंडिया-समूह के अंतिम मकसद की कामयाबी के लिए असंदिग्ध दर्थीचि मुद्रा में है। मगर एक धड़ा है, जो इस फुगावे की मादकता में मशगूल डोल रहा है कि कांग्रेस ही इंडिया-समूह का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है; कि कांग्रेस ही इस चुनाव के बाद भी इंडिया-समूह के सबसे बड़े राजनीतिक दल के तौर पर उभर कर सामने आएगी; कि कांग्रेस का इतिहास 138 साल पुराना है।

व्यापार समाचार

सैकड़ों हार्डवेयर कर्मचारियों की जाएगी नौकरी, गूगल करने जा रहा छंटनी

सैकड़ों हार्डवेयर कर्मचारियों की छंटनी कर रहा है, खासका संस्थानित वास्तविकता (एआर) डिजिटल में, जबकि फिटबिट के सह-संस्थापक जेम्स पार्क, एरिक फ्रीडमन और अन्य फिटबिट नेता कथित तौर पर कंपनी छोड़ रहे हैं। गूगल ने 2019 में 2.1 बिलियन डॉलर में कंपनी फिटबिट का अधिग्रहण किया था। गूगल के एक प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, डीएसपीए (डिवाइसेज और सर्विसेज) में कुछ सी भूमिकाएं खत्म की जा रही हैं, इसका सबसे ज्यादा असर 1 पीस एआर हार्डवेयर टीम पर पड़ेगा। डिवाइस और सेवा टीमों परिषेल, नेटर और फिटबिट डिवाइस के लिए जिम्मेदार हैं। वर्कसा ने 92% गूगल को बताया, हालांकि हम अपनी 1 पीस एआर हार्डवेयर टीम में बदलाव कर रहे हैं, गूगल अन्य एआर पहोंच, जैसे हमारे उत्पादों में एआर अनुभव और उत्पाद साझेदारी के लिए गहराई से प्रतिबद्ध हैं। कंपनी ने कहा कि वह हमारे फिटबिट उपयोगकर्ताओं को अच्छी तरह से सेवा देने, व्यक्तिगत एआर के साथ स्वास्थ्य क्षेत्र में नवाचार करने और पिक्सेल वॉच, पुनर्डिजाइन किए गए फिटबिट ऐप, फिटबिट प्रीमियम सेवा और फिटबिट ट्रैकर लाइन के साथ गति बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। तकनीकी दिग्गज ने कहा, यह काम हमारे नाम संगत मॉडल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहा। गूगल एक कार्यात्मक संगठन मॉडल पर स्थित कर रहा है, जहां पिक्सेल, नेटर और फिटबिट हार्डवेयर में हार्डवेयर इंजिनियरिंग के लिए जिम्मेदार एक टीम होगी।

मोटोरोला ने पैनटोन कलर ऑफ द इयर, पीच फज़ के साथ मोटोरोला razr40 ultra और edge40 neo को लॉन्च किया

नईदिल्ली (एजेंसी)। मोटोरोला, भारत के सर्वश्रेष्ठ 5जी स्मार्टफोन ब्रांड और पैनटोनTM, वैश्विक रंग प्राधिकरण ने दूसरे साल के लिए मिलकर पैनटोन कलर ऑफ द इयर में डिवाइस बनाने के लिए एक टीम बनाई है। मोटोरोला PANTONE™ के साथ बहु-वर्षीय विशेष सहयोग करने वाला पहला और एकमात्र स्मार्टफोन ब्रांड है, जो सार्थक नवाचार के माध्यम से लोगों के जीवन को समृद्ध करते हुए डिजाइन और रंगों में अंतर लाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप है। इस वर्ष, चुने गए PANTONETM 13-1023 पीच फज़ की 25वीं वर्षांक है। एक मख्याती कोमल पीच रंग, पीच फज़ की एक अद्वारी आधा है, जो एक्स्ट्राटा, सुप्रदूषित और सहयोग की भावाओं को अधिकृत करती है। नए वर्ष का रंग, पैनटोन 13-1023 पीच फज़, मोटोरोला के समावेश और प्रौद्योगिकी को सभी के लिए अधिक पहुंच योग्य बनाने के साथ खूबसूरी से मेल खाता है। जबकि प्रौद्योगिकी मानवता के साथ जुड़ जाती है, हम रंग पर भरोसा करते हैं कि यह हमें अधिकृत और अपने डिवाइस के साथ और भी गहराई में और अधिक सार्थक अनुभवों के लिए एक उपकार बनाने करते हैं में मदद करता है। वर्ष 2024 का रंग हमारी आधारी दुनिया को गर्मजोशी, एक्स्ट्राटा और करुणा की हमारी चाहत के साथ सहजता से एकीकृत करके इसे पूरा करता है। Motorola razry® Ultra और Motorola Edge 40 neo को लॉन्च होने वाले दुनिया के पहले स्मार्टफोन के रूप में चुना गया है, जो इस रंग को अपनाने हैं और डिवाइस की तरह ही मानवीय कनेक्शन के महत्व पर जोर देते हैं। PANTONE™ के साथ यह सहयोग प्रौद्योगिकी को अधिक सुलभ बनाने और उपभोक्ताओं को प्रौद्योगिकी के माध्यम से उद्देश्यपूर्ण ढंग से जुड़ने के लिए सहयोग बनाने के मोटोरोला के मिशन को मजबूत करता है।

यूटीआई मिड कैप फंड : बाजार की संभावित स्वीट स्पॉट से लाभ

नईदिल्ली (एजेंसी)। रोजमरा की जिंदगी के बीच कंपनियां विकास और सुरक्षा के दोनों में जुटती हैं, जिसमें कंपनियों ने छोटी कंपनियों में निहित चरण को सफलतापूर्वक पार कर लिया है। जैसे प्रैरिथिक पूँजी जुटाना, प्रारंभिक विकास के चुनौतियों का प्रवर्णन करता है। हालांकि, इन कंपनियों के नेतृत्व को बाहर रखने, महत्वपूर्ण अन्तर के साथ काम करने की संभवता है, और वे इन्हीं बड़ी नहीं हैं कि तो जो सेवा की अक्षमता निःशासनक हो। इसलिए, मिड कैप कंपनियों तो जो सेवा देते हैं और अच्छी तरह से स्थापित बड़ी कंपनियों के बीच एक अच्छा स्थान प्रदान कर सकती है। मिड कैप स्टॉक लाज कैप और स्माल कैप शेयरों के बीच आते हैं और अमानोर पर कंपनियों के बाजार पूँजीकरण के आधार पर निर्धारित होते हैं। सेवा की परिधान के अनुसार, पूँजीकरण के हिसाब से 101वीं 250वीं परियों में मिड कैप स्टॉक है। एक मिड कैप पूँजी कैप रुपये से पंड के कौप का न्यूनतम 65ल रुपये कैप कंपनियों के इकट्ठी और इकट्ठी संबंधित उपकरणों में निवेश करता है। मिड कैप कंपनियों में निवेश करने वाले पंड निवेशकों को मध्यम आकार के व्यवसायों की विकास कहनियों से लाभ उठाने का अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि, निवेशकों को अपने अंतर्निहित जोखियों का सज्जन लेना चाहा है, क्योंकि मिड कैप पूँजीकरण और इनाम क्षमता दोनों ही अच्छी तरह से विविध विकास पंडों की तुलना में अधिक है। यूटीआई मिड कैप पूँजी एक्स्ट्रा स्ट्रीकी स्कीम है जो मुख्य रुप से कंपनियों में निवेश करती है। पंड की रणनीति स्कलेबॉर्ड विजेन्स मॉडल और लंबी ग्रांथ रखने वाली कंपनियों में निवेश करने पर केंद्रित है। यह पंड उन अच्छी कंपनियों में निवेश करने के लिए भी खुला है जिनके व्यवसाय कमज़ोरी के क्षणिक दौर से जुर्जर हो हैं या परिवर्तन के दौर से जुर्जर हो हैं। यह पंड स्वस्थ वित्तीय स्थिति और एक निश्चित अवधि में मार्जिन बनाए रखने को क्षमता वाले व्यवसायों को चुनने के लिए शुद्ध बट्टम-अप स्टॉक चयन दृष्टिकोण अपनाता है। पंड के पार वित्तीय क्षेत्रों और उद्योगों को कवर करने वाले लगभग 80 शेयरों के साथ एक विविध पोर्टफोलियो भी है। यह पंड 7 अप्रैल, 2004 को अस्तित्व में आया और इसका पृष्ठांग 31 दिसंबर, 2023 तक 9,789 करोड़ रुपये रु. से अधिक है। पंड सही लेवल वाला उत्पाद है और इसलिए, सभी समय पर पोर्टफोलियो में 85-90वीं की सीमा में मिड कैप और स्माल कैप कंपनियों में आवंटन करना पसंद करेगा। 31 दिसंबर, 2023 तक पंड ने लगभग 66वीं मिड कैप कंपनियों में, 23वीं स्माल कैप कंपनियों में और शेष लाज कैप कंपनियों में निवेश किया है।

डोनेटकार्ट और स्वरित, द हेल्थ कैटलिस्ट के सम्मिलित प्रयासों से बालासोर ट्रेन दुर्घटना के हजारों प्रभावित लोगों को मिली राहत

नईदिल्ली (एजेंसी)। ऑडिशा के बहाना बाजार रेलवे स्टेन पर 2 जून, 2023 को कोरोनामैं एक्सप्रेस और दो ट्रेनों की भीषण ट्रक्टर हुई थी। इस व्यापक घटना में अनुसार तकलीफ राहिल उपलब्ध कराने पर लेकर उठें हैं। यह प्रकार प्रदान उपलब्ध कराने पर रहा है। इस सहयोग के बारे में बताते हुए पंड, डोनेटकार्ट के सीईओ एवं तपालब्ध कराने पर रहा है। इस सहयोग के बारे में बताते हुए एक अन्य विविध विकास कंपनी ने भी अपनी वित्तीय क्षमता दोनों ही अच्छी तरह से व्यवसायों और लाभकारी जैसी दूसरी वित्तीय क्षमताओं के बीच एक अच्छा स्थान प्रदान कर सकती है। यह पंड कैप कंपनियों के बाजार पूँजीकरण के आधार पर निर्धारित होते हैं। सेवा की परिधान के अनुसार, पूँजीकरण के हिसाब से 101वीं 250वीं परियों में मिड कैप स्टॉक है। एक मिड कैप पूँजी कैप रुपये से पंड के कौप का न्यूनतम 65ल रुपये कैप कंपनियों के इकट्ठी और इकट्ठी संबंधित उपकरणों में निवेश करता है। मिड कैप कंपनियों में निवेश करने वाले पंड निवेशकों को मध्यम आकार के व्यवसायों की विकास कहनियों से लाभ उठाने का अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि, निवेशकों को अपने अंतर्निहित जोखियों का सज्जन लेना चाहा है, क्योंकि मिड कैप पूँजीकरण और इनाम क्षमता दोनों ही अच्छी तरह से विविध विकास पंडों की तुलना में अधिक है। यूटीआई मिड कैप पूँजी एक्स्ट्रा स्ट्रीकी स्कीम है जो मुख्य रुप से कंपनियों में निवेश करती है। पंड की रणनीति स्कलेबॉर्ड विजेन्स मॉडल और लंबी ग्रांथ रखने वाली कंपनियों में निवेश करने पर केंद्रित है। यह पंड उन अच्छी कंपनियों में निवेश करने के लिए भी खुला है जिनके व्यवसाय कमज़ोरी के क्षणिक दौर से जुर्जर हो हैं या परिवर्तन के दौर से जुर्जर हो हैं। यह पंड स्वस्थ वित्तीय स्थिति और एक निश्चित अवधि में मार्जिन बनाए रखने को क्षमता वाले व्यवसायों को चुनने के लिए शुद्ध बट्टम-अप स्टॉक चयन दृष्टिकोण अपनाता है। पंड के पार वित्तीय क्षेत्रों के लाभ लगने वाले लगभग 80 शेयरों के साथ एक विविध पोर्टफोलियो भी है। यह पंड 7 अप्रैल, 2004 को अस्तित्व में आया और इसका पृष्ठांग 31 दिसंबर, 2023 तक 9,789 करोड़ रुपये रु. से अधिक है। पंड सही लेवल वाला उत्पाद है और इसलिए, सभी समय पर पोर्टफोलियो में 85-90वीं की सीमा में मिड कैप और स्माल कैप कंपनियों में आवंटन करना पसंद करेगा। 31 दिसंबर, 2023 तक पंड ने लगभग 66वीं मिड कैप कंपनियों में, 23वीं स्माल कैप कंपनियों में और शेष लाज कैप कंपनियों में निवेश किया है।

डोनेटकार्ट और स्वरित, द हेल्थ कैटलिस्ट के सम्मिलित प्रयासों से बालासोर ट्रेन दुर्घटना में घायल लोगों को तत्काल मरद

उपलब्ध कराने में बेंद जरूरी मरद मिली है। हमारा पूरा

ध्यान घायलों की रिकवरी के लिए, उनकी अलग अलग ट्रेनों की भीषण ट्रक्टर हुई थी। इस व्यापक घटना में अनुसार तकलीफ राहिल उपलब्ध कराने पर लेकर उठें हैं। यह प्रकार प्रदान उपलब्ध कराने पर रहा है। इस सहयोग के बारे में बताते हुए पंड, डोनेटकार्ट के सीईओ एवं तपालब्ध कराने पर रहा है। इस सहयोग के बारे में बताते हुए एक अन्य विविध विकास कंपनी ने भी अपनी वित्तीय क्षमता दोनों

